निंदा रस

- हरिशंकर परसाई

'क' कई महीने बाद आए थे। सुबह चाय पीकर अखबार देख रहा था कि तूफान की तरह कमरे में घुसे, 'साइक्लोन' की तरह मुझे अपनी भुजाओं में जकड़ा, तो मुझे धृतराष्ट्र की भुजाओं में जकड़े भीम के पुतले की याद आ गई। वह धृतराष्ट्र की ही जकड़ थी। अंधे धृतराष्ट्र ने टटोलते हुए पूछा-''कहाँ है भीम ? आ बेटा तुझे कलेजे से लगा लूँ।'' और जब भीम का पुतला उनकी पकड़ में आ गया, तो उन्होंने प्राण-घाती स्नेह से उसे जकड़-कर चूर-चूर कर डाला।

ऐसे मौके पर हम अक्सर अपने पुतले को अँकवार में दे देते हैं, हम अलग खड़े देखते रहते हैं। 'क' से क्या मैं गले मिला ? क्या मुझे उसने समेट कर कलेजे से लगा लिया ? हरगिज नहीं। मैंने अपना पुतला ही उसे दिया। पुतला इसलिए उसकी भुजाओं में सौंप दिया कि मुझे मालूम था कि मैं धृतराष्ट्र से मिल रहा हूँ। पिछली रात को एक मित्र ने बताया कि 'क' अपनी ससुराल आया है और 'ग' के साथ बैठकर शाम को दो-तीन घंटे तुम्हारी निंदा करता रहा। इस सूचना के बाद जब आज सबेरे वह गले लगा, तो मैंने शरीर से अपने मन को चुपचाप खिसका दिया और निस्नेह, कँटीली देह उसकी बाँहों में छोड़ दी। भावना के अगर काँटे होते, तो उसे मालूम होता कि वह नागफनी को कलेजे से चिपटाए है। छल का धृतराष्ट्र जब आलिंगन करे, तो पुतला ही आगे बढ़ाना चाहिए।

पर वह मेरा दोस्त अभिनय में पूरा है। उसके आँसू भर नहीं आए, बाकी मिलन के हर्षोल्लास के सब चिह्न प्रकट हो गए वह गहरी आत्मीयता की जकड़, नयनों से छलकता वह असीम स्नेह और वह स्नेह-सिक्त वाणी।

बोला, ''अभी सुबह गाड़ी से उतरा और एकदम तुमसे मिलने चला आया, जैसे आत्मा का एक खंड दूसरे खंड से मिलने को आतुर रहता है।'' आते ही झूठ बोला कम्बख्त। कल का आया है, यह मुझे मेरा मित्र बता गया था। इस झूठ में कोई प्रयोजन शायद उसका न रहा हो। कुछ लोग बड़े निर्दोष मिथ्यावादी होते हैं। वे आदतन, प्रकृति के वशीभूत झूठ बोलते हैं। उनके मुख से निष्प्रयास, निष्प्रयोजन झूठ ही निकलता है। मेरे एक रिश्तेदार ऐसे हैं। वे अगर बंबई जा रहे हैं और उनसे पूछें, तो वे कहेंगे ''कलकत्ता जा रहा हूँ'' ठीक बात उनके मुँह से निकल ही नहीं सकती। 'क' भी बड़ा निर्दोष, सहज-स्वाभाविक मिथ्यावादी है।

वह बैठा। कब आए ? कैसे हो ? वगैरह के बाद उसने 'ग' की निन्दा आंरभ कर दी। मनुष्य के लिए जो भी कर्म जघन्य है, वे सब 'ग' पर आरोपित करके उसने ऐसे गाढ़े काले तारकोल से उसकी तस्वीर खींची कि मैं यह सोचकर काँप उठा कि ऐसे ही काली तस्वीर मेरी 'ग' के सामने इसने कल शाम को खींची होगी।

सुबह की बातचीत में 'ग' प्रमुख विषय था। फिर तो जिस परिचित की बात निकल आती उसी को चार-छह वाक्यों से धराशायी करके वह बढ़ लेता।

अद्‌भुत है यह मेरा मित्र उसके पास दोषों का केटलाग है। मैंने सोचा कि जब यह हर परिचित की निंदा कर रहा है, तो क्यों न मैं लगे हाथ विरोधियों की गत इसके हाथों करा लूँ। मैं अपने विरोधियों का नाम लेता गया और वह उन्हें निंदा की तलवार से काटता चला। जैसे लकड़ी चीरने की आरा मशीन के नीचे मजदूर लकड़ी का लट्‌ठा खिसकाता जाता है, वैसे ही मैंने विरोधियों के नाम एक-एक खिसकाए और वह उन्हें काटता गया। कैसा आनंद था। दुश्मनों को रणक्षेत्र में एक के बाद एक कटकर गिरते देखकर योद्‌धा को ऐसा ही सुख होता होगा।

मेरे मन में गत रात्रि के उस निन्दक मित्र के प्रति मैल नहीं रहा। दोनों एक हो गए। भेद तो रात्रि के अंधकार में

ही मिटता है। दिन के उजाले में भेद स्पष्ट हो जाते हैं। निंदा का ऐसा ही भेद-नाशक अँधेरा होता है। तीन चार घंटे बाद, जब वह बिदा हुआ, तो हम लोगों के मन में बड़ी शांति और तुष्टि थी।

निंदा की ऐसी ही महिमा है। दो-चार निंदकों को एक जगह बैठकर निंदा में निमग्न देखिए और तुलना कीजिए दो-चार ईश्वर-भक्तों से जो रामधुन लगा रहे हैं। निंदकों की-सी एकाग्रता परस्पर आत्मीयता, निमग्नता भक्तों में दुर्लभ है। इसीलिए संतों ने निंदकों को आँगन कुटी छवाय पास रखने की सलाह दी है।

कुछ मिशनरी निंदक मैंने देखे हैं। उनका किसी से बैर नहीं, द्वेष नहीं। वे किसी का बुरा नहीं सोचते। पर चौबीसों घंटे वे निंदा-कर्म में बहुत पवित्र भाव से लगे रहते हैं। उनकी नितांत निर्लिप्तता, निष्पक्षता इसी से मालूम होती है कि वे प्रसंग आने पर अपने बाप की पगड़ी भी उसी आनंद से उछालते हैं, जिस आनंद से अन्य लोग दुश्मन की। निंदा इनके लिए 'टानिक' होती है।

ट्रेड यूनियन के इस जमाने में निन्दकों के संघ बन गए। संघ के सदस्य जहाँ-तहाँ से खबरें लाते हैं और अपने संघ के प्रधान को सौंपते हैं। यह कच्चा माल हुआ। अब प्रधान उनका पक्का माल बनाएगा और सब सदस्यों को बहुजनहिताय मुफ्त बाँटने के लिए दे देगा। यह फुरसत का काम है, इसीलिए जिनके पास कुछ और करने को नहीं होता, वे इसे बड़ी खुशी से करते हैं। एक दिन हमसे एक ऐसे संघ के अध्यक्ष ने कहा, ''यार आजकल लोग तुम्हारे बारे में बहुत बुरा कहते हैं।'' हमने कहा, आपके बारे में मुझसे कोई भी, बुरा नहीं कहता। लोग जानते हैं कि आपके कानों के घूरे में इस तरह का कचरा मजे में डाला सकता है।

ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निन्दा भी होती है लेकिन इसमें वह मजा नहीं जो मिशनरी भाव से निन्दा करने में आता है। इस प्रकार का निन्दक बड़ा दुःखी होता है। ईर्ष्या-द्वेष के चौबीसों घंटे जलता है और निन्दा का जल छिड़ककर कुछ शांति अनुभव करता है। ऐसा निन्दक बड़ा दयनीय होता है। अपनी अक्षमता से पीड़ित वह बेचारा दूसरे की सक्षमता के चाँद को देखकर सारी रात-श्वान-जैसा भौंकता है। ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित निंदा करने वाले को कोई दंड देने की जरूरत नहीं है। वह निन्दक बेचारा स्वयं दंडित होता है। आप चैन से सोइए और वह जलन के कारण सो नहीं पाता! उसे और क्या दंड चाहिए ? निरंतर अच्छे काम करते जाने से उसका दंड भी सख्त होता जाता है। जैसे, एक कवि ने एक अच्छी कविता लिखी; ईर्ष्याग्रस्त निंदक को कष्ट होगा। अब अगर एक और अच्छी लिख दी, तो उसका कष्ट दुगुना हो जाएगा।

निन्दा का उद्गम ही हीनता और कमजोरी से होता है। मनुष्य अपनी हीनता से दबता है। वह दूसरों की निन्दा करके ऐसा अनुभव करता है कि वे सब निकृष्ट हैं और वह उनसे अच्छा है। उसके अहं को इससे तुष्टि होती है। बड़ी लकीर को कुछ मिटाकर छोटी लकीर बड़ी बनती है। ज्यों-ज्यों कर्म क्षीण होता जाता है, त्यों-त्यों निंदा की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है। कठिन कर्म ही ईर्ष्या-द्वेष और इनसे उत्पन्न निंदा को मारता है। इंद्र बड़ा ईर्ष्यालु माना जाता है, क्योंकि वह निठल्ला है। स्वर्ग में देवताओं को बिना उगाया अन्न, बे-बनाया महल और बिन-बोए फल मिलते हैं। अकर्मण्यता से उन्हें अप्रतिष्ठित होने का भय बना रहता है। इसलिए कर्मी मनुष्यों से उन्हें ईर्ष्या होती है।

निन्दा कुछ लोगों की पूँजी होती है। बड़ा लंबा-चौड़ा व्यापार फैलाते हैं वे इस पूँजी से। कई लोगों की प्रतिष्ठा ही दूसरों की कलंक-कथाओं के परायण पर आधारित होती है। बड़े रसविभोर होकर वे जिस-तिस की सत्यकल्पित कलंक-कथा सुनाते हैं; और स्वयं को पूर्ण संत समझने की तुष्टि का अनुभव करते हैं।

आप इनके पास बैठिए और सुन लीजिए, 'बड़ा खराब जमाना आ गया । तुमने सुना ? फलाँ और अमुक..... ।' अपने चरित्र पर आँख डालकर देखने की उन्हें फुरसत नहीं होती। एक कहानी याद आ रही है। एक स्त्री किसी सहेली के पति की निंदा अपने पति से कर रही थी। वह बड़ा उचक्का, दगाबाज आदमी है। बेईमानी से पैसे कमाता है। कहती

है कि मैं उस सहेली की जगह होती, तो ऐसे पति को त्याग देती। तब उसका पति उसके सामने यह रहस्य खोलता है कि वह स्वयं बेईमानी से इतना पैसा कमाता है। सुनकर स्त्री स्तब्ध रह जाती है। क्या उसने पति को त्याग दिया ? जी हाँ वह दूसरे कमरे में चली गई।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि हममें जो करने की क्षमता है, वह यदि कोई करता है, तो हमारे पिलपिले अहं को धक्का लगता है, हममें हीनता और ग्लानि आती है। तब हम उसकी निंदा करके उससे अपने को अच्छा समझकर तुष्ट होते हैं।

उस मित्र की मुलाकात के करीब दस-बारह घंटे बाद यह सब मन में आ रहा है। अब कुछ तटस्थ हो गया हूँ। सुबह जब उसके साथ बैठा था, तब मैं स्वयं निंदा के 'काला सागर' में डूबता-उतराता, कल्लोल कर रहा था। बड़ा रस है न निंदा में। सूरदास ने इसीलिए इसे 'निन्दा सबद रसाल' कहा है।

अभ्यास

1. लेखक ने निन्दकों को पास में रखने की सलाह क्यों दी है?
2. अपने निन्दकों को उचित उत्तर देने का लेखक ने क्या उपाय सुझाया है ?
3. निन्दा की प्रवृत्ति से बचने के लिए क्या करना चाहिए ?
4. ''छल का धृतराष्ट्र जब आलिंगन करे तो पुतला ही आगे बढ़ाना चाहिए'' कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
5. ''कुछ लोग बड़े निर्दोष मिथ्यावादी होते हैं।'' कथन की विवेचना कीजिए।
6. इस पाठ से आपने क्या शिक्षा ग्रहण की और क्या निश्चय किया ? स्पष्ट कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. मध्यप्रदेश के व्यंग्य लेखकों की सूची तैयार कर उनके व्यंग्य-निबंधों को पढ़िए।
2. क्या आप कभी किसी की निंदा करते हैं, यदि हाँ तो उसे डायरी पर लिखिए और विचार कीजिए कि क्या आप सही करते हैं?
3. 'निंदा' पर अपने विचार निबंध के रूप में लिखिए।

शब्दार्थ

साइक्लोन = चक्रवात बवंडर। **प्राणघाती** = प्राण लेने वाला। **आलिंगन** = गले मिलना। **स्नेह सिक्त**= स्नेह से भरी हुई। **मिथ्यावादी** = झूठा। **जघन्य** = क्रूरतम। **केटलॉग** = क्रमवद्ध सूची। **तुष्टि** = तृप्ति। **एकाग्रता** = ध्यान। **परस्पर** = आपस में। **मिशन** = अभियान। **टानिक** = शक्तिवर्धक औषधि। **श्वान**= कुत्ता। **उद्गम** = प्रकट होने का स्थान। **निकृष्ट** = निम्न। **क्षीण** = कमजोर। **प्रवृत्ति** = आदत। **ग्लानि** = क्षोभ।